# भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि एवं मार्क्सवादी दृष्टिकोण (ए0आर0 देसाई के विशेष सन्दर्भ में)

**डॉ0 उत्तरा यादव,**

*एसोसिएट प्रोफेसर–समाजशास्त्र विभाग,*
*महिला कालेज, लखनऊ*

## शोध सारांश

*ए0आर0 देसाई मार्क्सवादी विचारधारा के प्रबल समर्थक थे। वह इण्डियन सोसियोलाजिकल सोसाइटी के संस्थापक सदस्यों में से एक थे। इनकी रचना भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि में मार्क्सवादी विचारधारा एवं पद्धति के रूप में जानी जाती है। इन्होंने भारत में राष्ट्रवाद के उदय के विभिन्न कारणों, जैसे–नवीन सामाजिक वर्गों का उदय, सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आन्दोलनों, नारी स्वतंत्रता एवं जाति आधारित आन्दोलनों आदि की विवेचना मार्क्सवादी विचारधारा के आधार पर की है। ए0आर0 देसाई ने भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि एवं मार्क्सवादी दृष्टिकोण में स्पष्ट करने के साथ ही भारत के जनवादी आन्दोलन, शिक्षा की भूमिका साम्प्रदायिकता तथा जातिगत विभेदों को कुछ प्रमुख सामाजिक तथ्यों के रूप में स्पष्ट किया है।प्रोफेसर देसाई द्वारा लिखित पुस्तक 'भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि' वह महत्त्वपूर्ण प्रयास है जिसमें उन्होंने 'मार्क्सवादी बौद्धिक उपागम' के आधार पर समाजशास्त्र तथा इतिहास को मिलाते हुए यह स्पष्ट किया है कि ब्रिटिश उपनिवेशवादी शासन के अन्तर्गत यहाँ जो नई भौतिक दशाएँ पैदा हुई उन्हीं के फलस्वरूप राष्ट्रवाद का प्रादुर्भाव हुआ। ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत औद्योगिकीकरण तथा आधुनिकीकरण के द्वारा जिन नये आर्थिक सम्बन्धों की स्थापना हुई उनके फलस्वरूप भारत की परम्परागत स्थापना हुई।*

**Keywords :** *राष्ट्रवाद, बहुआयामी, अधीनता, सामराज्यवाद, सामंतवाद, आन्दोलन, हस्तशिल्प*

ए0आर0 देसाई ने मार्क्स तथा एंगेल्स की रचनाओं का गहन अध्ययन किया। इसके अतिरिक्त लिओन ट्राटस्की के लेखों से भी बहुत प्रभावित हुए। ए0आर0 देसाई जी को 'मार्क्सवादी सिद्धान्त शास्त्री' कहा जाने लगा। सन् 1953 में उन्होंने ट्राटस्कीवादी क्रान्तिकारी समाजवादी दल की भी सदस्यता ग्रहण कर ली। इनकी रचना भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि में मार्क्सवादी विचारधारा एवं पद्धति के रूप में जानी जाती है। इन्होंने भारत में राष्ट्रवाद के उदय के विभिन्न कारणों, जैसे–नवीन सामाजिक वर्गों का उदय, सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आन्दोलनों, नारी स्वतंत्रता एवं जाति आधारित आन्दोलनों आदि की विवेचना मार्क्सवादी विचारधारा के आधार पर की। यह देसाई की प्रथम रचना मानी जाती है जिसमें राष्ट्रवाद के वर्गचरित का विश्लेषण किया गया है।

## भारतीय राष्ट्रवाद का उदय

भारतीय राष्ट्रवाद के उदय और विकास का अध्ययन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की प्रक्रिया अत्यन्त जटिल और बहुआयामी रही है। इसके लिए बहुत से कारण जिम्मेदार हैं। अंग्रेजों के भारत आने से पहले

भारतीय समाज की सामाजिक संरचना काफी अनूठी थी और शायद इतिहास में इसके जैसी कोई दूसरी सामाजिक संरचना नहीं थी, इसका आर्थिक आधार यूरोपीय देशों के पूर्व पूंजीवादी मध्ययुगीन समाजों से काफी अलग था। अंग्रेजों द्वारा भारतीय लोगों की अधीनता की स्थिति में रहने के दौरान उभरकर सामने आया। विकसित ब्रितानवी राष्ट्र ने अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए भारतीय समाज की आर्थिक संरचना में अमूलचूल परिवर्तन किया, एक केन्द्रीयकृत राज्य की स्थापना की।

आधुनिक शिक्षा, संचार के आधुनिक साधनों और अन्य संस्थाओं की स्थापना की। इसके चलते सामाजिक वर्गों का विकास हुआ। इन सामाजिक शक्तियों की मूल प्रवृत्ति के कारण इनका अंग्रेजी साम्राज्यवाद से संघर्ष हुआ। ये शक्तियॉ ही भारतीय राष्ट्रवाद के उदय और विकास का आधार और प्रेरक शक्ति बन गई। इस तरह जटिल और विशिष्ट सामाजिक पृष्ठभूमि राष्ट्रवाद का उदय हुआ और इसका अभी तक विकास हो रहा है।

## अंग्रेजों के शासन के दौरान भारत में लाये गये परिवर्तनों की भूमिका

ब्रिटिश शासन के द्वारा यहॉ अनेक नई व्यवस्थाएँ लागू की गईं जो प्रत्यक्ष रूप में इंग्लैण्ड के आर्थिक हितों से सम्बन्धित थीं लेकिन इन्हीं के प्रभाव से भारत में पहली बार एक नई सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक चेतना उत्पन्न होना आरम्भ हुई। इसी चेतना ने भारत में राष्ट्रवाद के उदय और इसके विकास में योगदान करना आरम्भ किया जिनका उल्लेख ए0आर0 देसाई द्वारा निम्नांकित रूप से किया है।

## भारतीय खेती में परिवर्तन

### भूमि पर निजी सम्पत्ति का आरम्भ

भारत पर अंग्रेजों की जीत ने मौजूदा भूमि व्यवस्था में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया। भारत में अंग्रेजों द्वारा शुरु की गई नई राजस्व व्यवस्था में गॉव की जमीन पर ग्रामीण समुदाय के प्रथागत अधिकारों को खत्म कर दिया गया। इसके स्थान पर भूमि पर दो तरह के अधिकारों की व्यवस्था की गई। देश के कुछ भागों में **जमींदारी व्यवस्था** और कुछ अन्य भागों में **किसानों का व्यक्तिगत स्वामित्व।**

लार्ड कार्नवालिस ने अपने कार्यकाल के दौरान सन् 1793 में बंगाल, बिहार और उड़ीसा के लिए 'स्थायी भूमि बंदोबस्त व्यवस्था' की शुरुआत की एवं पंजाब के अस्थायी बंदोबस्त व्यवस्था का अस्तित्व था और दूसरी ओर अन्य भागों में इसने 'व्यक्तिगत किसान स्वामित्व' की व्यवस्था निर्मित की जिसे **रैयतवाड़ी व्यवस्था** के नाम से जाना जाता है।

सर थॉमस मुनरो ने 1820 में जब वे मद्रास के गवर्नर थे तो उन्होंने इस प्रान्त के बड़े हिस्से में इसकी शुरुआत की थी। यह व्यवस्था भारतीय भू–भाग के 51 प्रतिशत हिस्से में लागू की गई थी।

### नई भू–राजस्व व्यवस्था

नई भूमि व्यवस्था ने भूमि के मूल्यांकन और राजस्व अदा करने की इकाई के रूप में गॉव की भूमिका को खत्म कर दिया। इसने भूमि के व्यक्तिगत मालिकों का सृजन करने, व्यक्तिगत स्वयं पर भूमि के मूल्यांकन और राजस्व को अदा करने की व्यवस्था स्थापित की एवं सुनिश्चित राशि अदा करने की व्यवस्था अपनाई गई। इस प्रकार नई भूमि व्यवस्था ने गॉवों को उनके खेतिहर आर्थिक कार्यों से वंचित किया।

### खेती का व्यवसायीकरण

इस व्यवस्था की शुरुआत होने का एक नतीजा यह निकला कि जहॉ पुरानी व्यवस्था का मुख्य काम गॉव के उपयोग के लिए उत्पादन करना

था, वहीं नयी व्यवस्थ में बाजार के लिए उत्पादन किया जाने लगा। अब बेचने का उद्देश्य उत्पादन और उत्पाद को निर्धारित करने लगा और इस तरह इसका चरित्र बदल गया।

अंग्रेजों के शासन के दौरान परिवहन के साधनों में सुधार हुआ। व्यापारी पूंजी की सक्रियता का भी विकास हुआ। इससे बाजार तक किसानों की पहुॅच बढ़ी और ज्यादा से ज्यादा नकद प्राप्त करने के लिए बाजार की मॉग के अनुरूप खेती करने लगे ताकि वह अपना भू–राजस्व नगद के रूप में चुका सकें।

इसके चलते एक परिघटना का उभार हुआ जिससे खेती के **'वाणिज्यीकरण या व्यावसायिकरण'** की संज्ञा दी जा सकती है। भारतीय अर्थव्यवस्था के पूंजीवादी परिवर्तन के कारण एक भौतिक बुनियाद निर्मित करने का काम किया तथा आर्थिक रूप से सम्पूर्ण भारत को तथा भारत और विश्व को जोड़ने का काम किया। इससे भारतीय लोगों की राष्ट्रीय एकजुटता तथा अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा मिला।

### पारम्परिक भारतीय गाँव का विघटन

अंग्रेजों के शासन के दौरान गॉवों में पूँजीवादी आर्थिक सम्बन्धों का सृजन हुआ और इन सम्बन्धों ने अपनी गहरी जड़ें जमा लीं। इसके साथ ही अब तक स्वतंत्र रहे विभिन्न केन्द्रों को एक एकीकृत राज्य व्यवस्था के अन्तर्गत लाया गया तथा भारत का राजनीतिक प्रशासनिक एकीकरण किया गया। इन दोनों बदलावों ने अब तक पूरी तरह अभेद माने जाने वाली भारतीय गॉव स्वायत्तता को खत्म कर दिया एवं पारम्परिक गॉव की आर्थिक और प्रशासनिक आत्मनिर्भरता विलुप्त हो गई। अब सामान्य आर्थिक हितों और इससे सामने आने वाले सहयोगात्मक सम्बन्धों पर आधारित सामूहिक ग्रामीण जीवन का स्थान एक नये तरह के गॉव ने ले लिया। यह नया गॉव प्रतियोगिता और संघर्ष पर आधारित था। निधि सम्पत्ति और बाजार के कारण सामने आने वाले प्रतियोगी आर्थिक सम्बन्धों ने पुराने सामाजिक, आर्थिक सम्बन्धों का स्थान ले लिया।

## भारतीय खेती में परिवर्तन के सामाजिक परिणाम

### राष्ट्रीय खेती का उभार

भारत में अंग्रेजों के आगमन के साथ एक नये प्रकार के भूमि सम्बन्धों की स्थापना हुई। इसमें भूमि को निधि सम्पत्ति में तब्दील कर दिया गया और भूमि के मालिकों को यह अधिकार दिया कि इस जमीन को बेच सकता है। इससे भारत की खेतिहर अर्थव्यवस्था ने विकास के नये चरण में प्रवेश किया। भारतीय खेती का स्तर एक राष्ट्रीय खेती के स्तर तक पहुॅच गया।

### भूमि के उप विभाजन और विखण्डन में वृद्धि

भारतीय खेती की एक सबसे खतरनाक और नुकसान पहुॅचाने वाली विशेषता यह थी कि यहॉ खेती की जमीन का अत्यधिक उपविभाजन और विखण्डन हो गया। हर किसान के हिस्से में आने वाले जमीन की मात्रा में लगातार गिरावट हुई। भूमि के उपविभाजन और इसके विखण्डन की प्रक्रिया में तेजी लाने वाला सबसे निर्णायक कारक यह था कि लाखों शहरी और ग्रामीण हस्तशिल्पियों और कारीगरों के बर्बाद होने के कारण खेती पर दबाव अधिक बढ़ गया।

भारत में आधुनिक उद्योगों की आनुपातिक वृद्धि के बगैर ही यहॉ के पुराने हस्तशिल्प उद्योग नष्ट हो गये। भारत में इसे वि–औद्योगीकरण की संज्ञा दी गई। भूमि पर अत्यधिक लोगों की निर्भरता ने उपविभाजन और विखण्डन की प्रक्रिया में वृद्धि की।

## गरीबी में वृद्धि

भारत में बड़ी संख्या में किसान इसलिए कर्ज में डूब जाते थे क्योंकि मानसून के कारण उनके

पास सरकार को राजस्व देने के लिए कोई पैसा नहीं होता था। सूखा या अकाल भारतीय लोगों के आर्थिक जीवन की एक विशेषता थी।

एक गरीब किसान भूमि से होने वाली आय का बड़ा भाग राज्य को कर के रूप में अदा कर देता है। इसके साथ ही वह चीनी, तेल, नमक, कैरोसीन जैसी अन्य दैनिक आवश्यकता वाली वस्तुओं के लिए भी कर देता है। किसान की गरीबी से उत्पन्न होने वाला यह एक अन्तहीन चक्र था।

## ग्रामीण कर्ज में वृद्धि

सन् 1880 में ही खेती का कर्ज एक उच्च स्तर पर पहुँच चुका था। भू–स्वामी वर्ग का एक तिहाई भाग कर्ज में डूब चुका था। 1980 से ही ग्रामीण जनसंख्या के कर्ज में ज्यामितिक दर (जियोमेट्रिक रेट) से वृद्धि रही थी। मैकलगन ने अनुमान लगाया कि 1911 में ब्रिटिश इण्डिया में कुल 500 करोड़ का कर्ज था।

एम0एल0 डार्लिंग के मुताबिक 1925 में 300 करोड़ का कर्ज था। 1925 से सेण्ट्रल बैंकिंग इंक्वायरी कमिटी रिपोर्ट के मुताबिक कुल 900 करोड़ का कर्ज था और एग्रीकल्चर क्रेडिट डिपार्टमेंट के मुताबिक 1937 में कुल 1800 करोड़ का कर्ज था। किसानों पर कर्ज का सबसे बड़ा कारण यह है कि तकरीबन 75 प्रतिशत किसान अपनी जमीन से अपनी न्यूनतम आजीविका भी हासिल नहीं कर सकते हैं।

## भू–दासता का उदय

भारत के कुछ भागों में किसान कर्ज के कारण भू–दासता (सर्क) के तब्दील हो गये। आधुनिक कर्ज के कारण उत्पन्न हुई आर्थिक दासता ने मध्ययुगीन रूप धारण कर लिया। बिहार और उड़ीसा से 'कमीउती' नाम की एक व्यवस्था है जिसमें वास्तव में भू–दासों द्वारा खेती की जाती है। कमियॉ अपने मालिकों के बंधुआ मजदूर होते हैं।

## शहरी हस्तशिल्प का पतन

### शहरी हस्तशिल्प पर अंग्रेजों के शासन का प्रभाव

भारत के शहरी हस्तशिल्प पर अंग्रेजों के शासन के प्रभाव को डी0आर0 गाडगिल ने बेहतरीन तरीके से अभिव्यक्त करते हुए लिखा है कि इस आर्थिक संक्रमण में एकमात्र नाटकीय घटना पुराने हस्तशिल्प का पतन था। दरअसल अचानक और पूरी तरह से इनका अंत हो गया।

## परिवहन के आधुनिक साधन और भारतीय राष्ट्रवाद का उदय

लोगों के आधुनिक राष्ट्रों में एकजुट होने में रेलवे, बस, भाप इंजन से चलने वाली नौकाओं, जैसे–परिवहन के आधुनिक साधनों की भूमिका को वास्तविक से ज्यादा बढ़ा–चढ़ाकर नहीं देखा जा सकता है। यह कोई सहयोग नहीं है कि 19वीं सदी में परिवहन के आधुनिक साधनों का आविष्कार हुआ और यही सदी राष्ट्रवाद के उभार की भी सदी थी। इस सदी में आविष्कृत परिवहन के आधुनिक साधनों ने उन्हें राष्ट्रों के रूप में आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से मजबूत होने में सहायता प्राप्त की।

## परिवहन के आधुनिक साधनों का आरम्भ

इंग्लैण्ड में मशीन पर आधारित शक्तिशाली उद्योगों का प्रसार हुआ। ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सरकार ने ब्रिटेशन के उद्योगों के हितों को पूरा करने के लिए भारत में रेलवे की स्थापना की और सड़कों का निर्माण किया। भारत में लार्ड डलहौजी के व्यापक स्तर पर रेलवे निर्माण के कार्यक्रम की शुरुआत की। अपने प्रसिद्ध **मिनट**

**ऑन रेलवे** में उन्होंने स्पष्ट रूप से रेलवे के निर्माण के पीछे की आर्थिक कारणों की व्याख्या की।

रेलवे का निर्माण भारतीय व्यापार वर्ग को हो रहे मुनाफे, जमींदारों के तबके और अमीर बुद्धिजीवियों के साथ मिलकर स्वतंत्र भारतीय उद्योगों के जनम को सम्भव बनाया। रेलवे और आधुनिक सड़कों ने खेती के क्षेत्र में वास्तविक क्रान्ति ला दी।

## भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में आधुनिक शिक्षा की भूमिका

भारत में आधुनिक शिक्षा के प्रसार में लिए तीन मुख्य एजेंसियॉ जिम्मेदार थीं– (1) विदेशी ईसाई मिशनरी, (2) अंग्रेज सरकार एवं (3) प्रगतिशील। मिशनरियों ने भारत में शिक्षा के प्रसार के क्षेत्र में बहुत विस्तृत काम किया। अंग्रेज सरकार ने भारत में अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार करने में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने भारत में स्कूलों और कॉलेजों का ऐसा नेटवर्क स्थापित किया जिसने असंख्य शिक्षित भारतीयों को आधुनिक ज्ञान से लैस किया।

1904 में इण्डियन यूनिवर्सिटीज एक्ट (भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम) पारित किया गया। 1921 के बाद शिक्षा में काफी प्रसार हुआ। 1921 और 1937 के बीच **कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर** द्वारा विश्व भारती की स्थापना की गई और कार्वे ने S.N.D.T. Women's (वीमेन्स) यूनिवर्सिटी का निर्माण किया गया। निधि स्तर पर तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ, काशी विद्यापीठ, जामिया मिलिया इस्लामिया और गुजरात विद्यापीठ जैसे शिक्षण संस्थान स्थापित किये गये।

## अंग्रेजों के शासन के दौरान भारत का राजनीतिक और प्रशासनिक एकीकरण

भारत पर अंग्रेजों की विजय का एक महत्त्वपूर्ण नतीजा यह निकला कि ऐसे केन्द्रीकृत राज्य की स्थापना हुई जिसमें भारतीय इतिहास में पहली बार देश में वास्तविक और बुनियादी राजनीतिक प्रशासनिक एकीकरण को जन्म दिया। अंग्रेजों ने देश भारत में एक ऐसे संरचना की स्थापना की जो पूरी तरह से नई थी। इसमें अत्यधिक केन्द्रीकरण था और देश के सबसे दूरस्थ भागों तक भी इसकी पहुँच थी।

## कानूनी एकीकरण

अंग्रेजों ने देश में कानून का एक समान शासन स्थापित किया। उन्होंने कानूनों का निर्माण किया और उन्हें संहिताबद्ध किया। कानून राज्य के सभी नागरिकों पर लागू होते थे। राज्य द्वारा नियुक्त न्यायिक अधिकारियों ने गॉवों और शहरों में राज्य के विभिन्न संहिताओं में निहित कानूनों की व्याख्या की और उन्हें लागू किया। इस तरह देश में निचली अदालत, जिला अदालत और उच्च न्यायालय और संघीय न्यायालय (फेडेरल कोर्ट) और प्रिवी काउंसिल की व्यवस्था कायम हुई।

## प्रशासनिक एकीकरण

अंग्रेजों ने एक अन्य प्रगतिशील कार्य करते हुए पेरेश देश का प्रशासनिक एकीकरण कर दिया। उन्होंने पदसोपानीय रूप से श्रेणीबद्ध लोक सेवाओं की स्थापना की जिसने देश का प्रशासनिक एकीकरण किया। इस तरह साम्राज्यीय, प्रान्तीय और आधीवस्थ सेवाओं का निर्माण हुआ जिन्होंने केन्द्रीकृत राज्य की कार्यपालिका का निर्माण किया। भारत में अंग्रेजी शासन की स्थापना ने भारत के इतिहास में पहली बार देश का व्यापार स्तर पर राजनीतिक, प्रशासनिक और कानूनी एकीकरण कर दिया।

अंग्रेजों के शासन के अन्तर्गत भारत के राजनीतिक और प्रशासनिक एकीकरण की एक

अन्य विशेषता यह थी कि इस ऐतिहासिक प्रगतिशील कार्य को पूरा करने वाली राज्य मशीनरी का विकास अलग–अलग चरणों में ब्रिटेशन की पार्लियामेंट (संसद) के विभिन्न अधिनियमों द्वारा हुआ।

## भारत में नये सामाजिक वर्गों का उदय

भारत में नये सामाजिक वर्गों का उभार अंग्रेजी शासक के अन्तर्गत एक नयी सामाजिक अर्थव्यवस्था एक नये प्रकार की राज्य व्यवस्था एक राज्य प्रशासनिक संयंत्र और शिक्षा के प्रसार का प्रत्यक्ष नतीजा था।

इंग्लैण्ड ने भारत पर धीरे–धीरे और विभिन्न चरणों में अपना आधिपत्य कायम किया। नये सामाजिक वर्ग सबसे पहले उन क्षेत्रों में आये जिन पर ब्रिटेन का प्रभुत्व पहले कायम हुआ। ब्रिटेन ने बंगाल पर सबसे पहले कब्जा किया। यहॉ भारतीय इतिहास में सबसे पहले ब्रिटेन सरकार का निर्माण हुआ और जमींदारी के रूप में भूमि पर निधि सम्पत्ति की व्यवस्था स्थापित की गई। सबसे पहले बंगाल में ही दो नये सामाजिक वर्ग **जमींदार और जोतदार** सामने आये एवं सर्वप्रथम बंगाल और बम्बई से ही जूट और कपास के कारखाने हुए जिससे उद्योगपतियों और सर्वहारा के नये सामाजिक वर्गों का उभार हुआ। इन प्रान्तों में ब्रिटेन ने एक जटिल और सुव्यवस्थित प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना की। इसने यहॉ आधुनिक चिकित्सा विज्ञान, कानून आदि नये विधानों में ज्ञान देने के लिए नये शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना की जिससे **पेशेवर वर्गों का उभार हुआ।**

## आधुनिक राष्ट्रवाद के विकास में प्रेस की भूमिका

आधुनिक समय में प्रेस एक शक्तिशाली सामाजिक संस्था बन गया है। यह इस बात से स्पष्ट है कि प्रेस को शान व्यवस्था के **चौथे खम्भे के रूप में मान्यता दी जाने लगी।** प्रेस समाज में सर्वोच्च स्थान पर काबिज और लोगों की नियति अपने हाथ में रखने वालों को नियंत्रित करने का महत्त्वपूर्ण साधन है। भारत में अंग्रेजों के आने से पहले मुद्रण प्रेस का अस्तित्व नहीं था। हालांकि यहॉ सबसे पहले 1557 में पुर्तगाल के **जेसुइट** ने ईसाई साहित्य मुद्रण करने के लिए इसका प्रयोग किया।

## 1900ई0 तक भारतीय प्रेस का विकास

राजा राममोहन राय भारत में राष्ट्रवादी प्रेस के संस्थापक थे। बंगाली में संवाद कौमुदी और फारसी में मिरात उल अकबर भारत के पहले अखबार थे। फरटूनजी मुर्धबान ने 1822 के आरम्भ में बॉम्बे समाचार की स्थापना की। दैनिक रूप से अभी भी इसका अस्तित्व है। प्रेस ने जाति बंधन, बाल विवाह, विधवा पुनर्विवाह, महिलाओं के सामाजिक, कानूनी और अन्य मसलों को सशक्त तरीके से उभारा।

## जाति व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष

## जाति व्यवस्था हिन्दू धर्म का कवच

सामाजिक सुधार आन्दोलन में जाति व्यवस्था पर विशेष रूप से हमला किया। जाति व्यवस्था हिन्दू धर्म का इस्पात कवच थी। यह वेदों से भी पुरानी व्यवस्था थी क्योंकि वेदों में इसके अस्तित्व को स्वीकार किया गया है। भारत में अंग्रेजों के विजय के बाद सामने आई नई आर्थिक शक्तियों और रूपों के कारण जाति का आर्थिक आधार पूरी तरह विखण्डित हो गया।

## जाति व्यवस्था के खिलाफ आन्दोलन

ब्रह्म समाज के नेता के रूप में रॉय का स्थान ग्रहण करने वाले देवेन्द्रनाथ टैगोर और केशव

चन्द्र सेन ने बिना किसी धर्मग्रंथ का सहारा लिए जाति व्यवस्था को स्पष्ट रूप से खारिज किया। ब्रह्म समाज के इतिहास ने सामाजिक विद्रोही की जो मशाल जलायी थी वह केशव चन्द्र सेन के मार्गदर्शन में सर्वोच्च स्तर तक पहुॅची। तेलांग, रानाडे और कूले 1873 में सत्य शोधक समाज की स्थापना की और जाति व्यवस्था के खिलाफ आन्दोलन किया।

## अस्पृश्यता के खिलाफ संघर्ष

हिन्दू समाज में अस्पृश्य या अछूत जाति व्यवस्था से बहिष्कृत थे। यद्यपि वे हिन्दू समाज से जुड़े हुए थे। ऐतिहासिक रूप से अस्पृश्यता भारत में आर्यों का विजय का नतीजा थी।

भारत में समाज सुधार आन्दोलनों के लिए अस्पृश्यता जैसी घृणास्पद सामाजिक परिघटना का उन्मूलन करना एक प्रमुख विषय बन गया। शिक्षा के प्रसार से **डॉ0 अम्बेडकर** जैसे बुद्धिजीवियों का एक वर्ग सामने आया और उन्होंने दलितों के बुनियादी मानव अधिकारों की स्थापना के लिए जबरदस्त संघर्ष किया।

डॉ0 अम्बेडकर जी ने ।सस प्दकपं क्मचतमेमक ब्सेंमे थ्मकमतंजपवद की स्थापना की उन्होंने दलित वर्गों के संघर्षों को आगे बढ़ाया। गॉधीजी ने 1932 में **अखिल भारतीय हरिजन सेवक संघ की स्थापना की।** यह संगठन सामाजिक सुधार एवं शिक्षा के प्रसार के लिए व्यापक स्तर पर काम किया।

समाज सुधार आन्दोलन ने अस्पृश्यता जैसे सामाजिक अन्याय को खत्म करने के लक्ष्य से काम किया। इस तरह लोकतांत्रिक आधार पर भारतीय लोगों के बीच राष्ट्रीय एकता निर्मित करने में योगदान दिया।

## महिलाओं की मुक्ति के लिए आन्दोलन

अंग्रेजों के आगमन के पूर्व के भारतीय समाज में वैदिक युग के आरम्भिक समय को छोड़कर हमेशा ही महिलाओं को पुरुषों की अधीनता में रखा गया। भारत पर पाश्चात्य देशों के आधुनिक लोकतांत्रिक विचारों का प्रभाव बढ़ा।

अंग्रेजों के शासनकाल में ही महिलाओं द्वारा सदियों से झेले जा रहे सामाजिक और कानूनी अन्यायों को खत्म करने के लिए बड़े पैमाने पर आन्दोलन संगठित किये गये।

भारतीय महिलाओं के सामाजिक, राजनीतिक और शैक्षणिक प्रगति के लिए काम करने वाले संगठनों ने 1926 में स्थापित ।सस प्दकपं ॅवउमदश्े ब्वदमितमदबम का प्रमुख स्थान है।

1860 में ईश्वरचन्द विद्यासागर द्वारा यह अधिनियम पारित किया गया जिसमें विवाहित और अविवाहित लड़कियों की उम्र 10 वर्ष निर्धारित की एवं 1856 में विधवाओं को पुनर्विवाह की कानूनी अनुमति प्रदान की। 1929 में चाइल्ड मैरिज रिस्ट्रेट एक्ट पारित किया गया।

1916 में प्रो0 कार्वे ने प्दकपंद ॅवउमदश्े न्दपअमतेपजल की स्थापना की जो महिलाओं को शिक्षा देने वाला एक उत्कृष्ट संस्थान था। 1919 के बाद राजनीति में भारतीय महिलाओं का तेजी से प्रवेश करना था। जब 1936 में कांग्रेस सरकार का गठन हुआ तो बहुत सी भारतीय महिलाओं ने मंत्रियों, प्रान्तीय विधायिकी में उप सचिवों और उपाध्यक्षों के रूप में काम किया। भारतीय महिलाएॅ स्थानीय वार्डों और नगरपालिकाओं की सदस्य भी बनीं।

## हिन्दुओं और मुस्लिमों के बीच सुधार आन्दोलन

पारम्परिक धार्मिक दृष्टिकोण, व्यवहार और संगठन और दूसरी ओर नयी सामाजिक और

आर्थिक यथार्थ के अन्तर्विरोध ने देश में बहुत से धर्म सुधार आन्दोलनों को जन्म दिया।

राष्ट्रीय आन्दोलनों द्वारा राष्ट्रीय राज्य और समाज की स्थापना के पहले शैशव राष्ट्रवाद ने प्रोटेस्टेंटवाद और धर्मसुधार आन्दोलन के रूप में धार्मिक स्वरूप ग्रहण किया।

## ब्रह्म समाज आन्दोलन

प्रथम आन्दोलन ब्रह्म समाज था, जिसकी स्थापना 1828 में राजा राममोहन राय (1772–1833) में की थी, भारतीय राष्ट्रवाद के पिता के रूप में वर्णित किया जा सकता है। उन्होंने प्राचीन हिन्दू धर्म के एकेश्वरवाद के बहुदेवतावाद में विकृत होने की आलोचना की एवं हिन्दू धर्म के मौजूदा मूर्ति पूजा की पद्धति की निन्दा की तथा सभी धर्मों और मानवता के लिए एक ईश्वर की संकल्पना प्रस्तुत की।

राजा राममोहन राय ने जाति व्यवस्था, सती प्रथा, बाल विवाह, खिलाफत आन्दोलन एवं महिलाओं की पुनर्विवाही आजादी तथा पुरुषों, महिलाओं के समान अधिकारों का समर्थन किया। ब्रह्म समाज राष्ट्रवादी आन्दोलन का प्रमुख प्रतिपादक था।

## आर्य समाज

आर्य समाज की स्थापना 1875 में बम्बई में दयानंद सरस्वती द्वारा की गई। यह भारतीय राष्ट्रवाद के प्रथम उभार को समाविष्ट करने वाला एक भिन्न प्रकार का आन्दोलन था। 1886 में दयानन्द आंग्ल वैदिक कालेज की स्थापना की।

## रामकृष्ण मिशन आन्दोलन

भारतीय लोगों की राष्ट्रीय जागरुकता को रामकृष्ण से प्रेरित आन्दोलन में भी अभिव्यक्ति मिली। इसके मुख्य प्रतिपादक स्वामी विवेकानंद थे। रामकृष्ण मिशन का लक्ष्य भारत को पश्चिमी सभ्यता के भौतिकवादी प्रभावों से बचाना था। इसने हिन्दू धर्म के मूर्ति पूजा और बहुदेववाद जैसी प्रथाओं को भी महिमामण्डन किया।

1902ई0 में 'भारत धर्म महामण्डल सोसाइटी' का गठन हुआ और 1890 में श्री नारायण ने **तिया** समुदाय का आन्दोलन आरम्भ किया। यह एक ऐसा समुदाय था जो दानवों की पूजा करता था। हिन्दू समाज के निम्नतम जातियों में से एक था।

## थियोसोफी

भारत में थियोसोफी की स्थापना **मैडम ब्लावतस्की और हेनरी स्टील ऑटकॉट ने 1879 में की थी** और इसे मुख्य रूप से **श्रीमती ऐनी बेसेंट** ने लोकप्रिय बनाया। यह एक ऐसा धार्मिक आन्दोलन था जो नये भारत और अन्तर्राष्ट्रीय स्थितियों के प्रभाव में आरम्भ हुआ। इस आन्दोलन का अनूठापन इस तथ्य में निहित था कि इसे एक ऐसे गैर भारतीय द्वारा आरम्भ किया गया जो हिन्दू धर्म का बहुत बड़ा प्रशंसक था। थियोसोफी ने प्राचीन हिन्दू धर्म के आध्यात्मिक दर्शन को स्वीकार किया तथा तथा आत्मा के अस्तित्व के इसके सिद्धान्त को मान्यता दी।

## भारतीय राष्ट्रवाद की अभिव्यक्ति के रूप में राजनीतिक आन्दोलनों का उदय

भारतीय लोगों और इनसे निर्मित विविध वर्गों और समूहों से ब्रिटेन का संघर्ष हुआ। इसका कारण यह था कि भारतीय लोगों और ब्रिटेन के हितों में सीधा टकराव हितों के संघर्ष का नतीजा था और इसके चलते देश में राजनीतिक आन्दोलनों का जन्म हुआ एवं उन्होंने डॉमिनियन स्टेट्स, होमरूल और यहाँ तक कि पूर्ण स्वतंत्रता की भी माँग की।

## 1857 का विद्रोह

1857 का विद्रोह पुराने भारतीय समाज विभिन्न स्तरों के बीच संचित असंतोष के परिणाम स्वरूप सामने आया था। यह ब्रिटेन की सर्वोच्चता और सम्प्रभुत्ता के खिलाफ विद्रोह था। नयी भू–राजस्व व्यवस्था ने किसानों पर अत्यधिक दबाव डाला जिसके कारण इनकी आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई थी। भारत के बाजारों में ब्रिटेन से निर्मित सामान के आने से लाखों कारीगर और हस्तशिल्पी बर्बाद हो गये थे। ये सभी 1857 के विद्रोह के प्रमुख कारण थे।

## इल्बर्ट बिल

लार्ड रिपन ने इल्बर्ट बिल का प्राविधान किया। इसमें आपराधिक न्याय के मामलों में भारतीय और यूरोपीय लोगों के साथ एक जैसा बर्ताव किया जायेगा। यूरोपीय समुदाय के तीखे विरोध के कारण यह बिल परास्त कर दिया गया।1877 में इंग्लैण्ड में होने वाले सर्विसेज परीक्षा की उम्र 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष कर दी तो सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने इसके खिलाफ आन्दोलन किया।

## भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन

भारतीय लोगों के सर्वप्रमुख संगठन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का पहला अधिवेशन बम्बई 1885 में हुआ था।

## 1907 में कांग्रेस का विभाजन

1907 में कांग्रेस का उदारवादियों और वाम राष्ट्रवादियों के बीच विभाजन हो गया।

## असहयोग आन्दोलन

सितम्बर 1920 में कलकत्ता में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ जिसमें अहिंसक असहयोग के कार्यक्रम को स्वीकार्य किया गया। गॉधीजी को इस आन्दोलन का नेतृत्व दिया गया।

## सविनय अवज्ञा आन्दोलन

5 सितम्बर 1921 को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की कार्यसमिति दिल्ली में मिली और इसमें सविनय अवज्ञा आन्दोलन आरम्भ करने का फैसला हुआ।

## साइमन कमीशन का बहिष्कार

1927 में साइमन कमीशन की नियुक्ति की गई जिसमें कोई भी भारतीय सदस्य नहीं था। सविधि आयोग (साइमन कमीशन) 3 फरवरी 1928 को भारत आया। इस दिन विरोधस्वरूप पूरे देश में हड़ताल का आयोजन किया गया।

## पूर्ण स्वतंत्रता

लाहौर कांग्रेस एक अन्य राष्ट्रवादी जन आन्दोलन की प्रस्तावना बन गया। कांग्रेस ने प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस घोषित किया। इसने 26 जनवरी 1930 को प्रथम स्वतंत्रता दिवस मनाया। पूरे देश में व्यापक प्रदर्शन और बैठकें हुईं।

## राष्ट्रीयताओं और अल्पसंख्यकों की समस्या

राष्ट्रीयताओं और अल्पसंख्यकों की समस्या भारतीय राष्ट्रवादी आन्दोलनों की एक प्रमुख समस्या थी। भारत में आंध्र, मलयाली, कर्नाटकी, महाराष्ट्रीयन, बलूची और अन्य राष्ट्रीय समूहों और भारतीय मुस्लिमों, सिखों, दलित वर्गों और अल्पसंख्यक समूहों के बीच बढ़ती राजनीतिक जागरुकता के कारण इस समस्या का महत्त्व अत्यधिक बढ़ गया।

## राष्ट्र और राष्ट्रीय अल्पसंख्यक

''एक राष्ट्र ऐतिहासिक रूप से विकसित भाषा, क्षेत्र, आर्थिक जीवन का एक समुदाय होता है जिसकी मनोवैज्ञानिक संरचना इसकी संस्कृति के माध्यम से अभिव्यक्त होती है।''

''इसके सदस्य एक सुनिश्चित क्षेत्र में रहते हैं, अमूमन एक भाषा बोलते हैं और सबसे बढ़कर एक साझा आर्थिक जीवन जीते हैं। इसके अलावा इनकी एक साझा मनोवैज्ञानिक संरचना होती है जो इनकी संस्कृति अभिव्यक्त होती है।''

## भारत में राष्ट्रवाद के मुख्य चरण

हमने भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के इतिहास का वर्णन किया है। भारतीय राष्ट्रवाद कई चरणों से गुजरा है। जैसे–जैसे यह विकास के एक चरण से दूसरे चरण की ओर आगे बढ़ा। इसके सामाजिक सुधार का विस्तार हुआ।

### प्रथम चरण (1857–85)

प्रथम चरण में भारतीय राष्ट्रवाद का आधार अत्यधिक संकुचित था। 19वीं सदी में भारत का बुद्धिजीवी वर्ग आरम्भिक दशकों में अंग्रेजों द्वारा स्थापित नई शैक्षणिक संस्थानों से मिली आधुनिक शिक्षा से शिक्षित हुआ।

### द्वितीय चरण (1885–1905)

भारतीय और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि के कारण इस दौर में एक ऐसे व्यापारी वर्ग का उभार हुआ, जिसके एक तबके ने राष्ट्रीय आन्दोलन का समर्थन करना आरम्भ कर दिया एवं 1905 में संगठित रूप से स्वदेशी आन्दोलन चलाया गया।

वायसराय के रूप में लार्ड कर्जन के कार्यकाल के दौरान भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम और बंगाल के विभाजन जैसे बहुत से अलोकप्रिय कदम उठाये गये।

### तृतीय चरण (1905–1918)

तीसरे चरण के दौरान प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान होमरूल आन्दोलन के चलते लोगों की राजनीतिक चेतना को और भी ज्यादा मजबूती मिली एवं उच्च वर्ग मुस्लिमों के एक तबके में राजनीतिक चेतना का विकास हुआ और इसने 1906 में अखिल भारतीय राजनीतिक संगठन मुस्लिम लीग की स्थापना हुई।

### चतुर्थ चरण (1918–1934)

इस चरण के दौरान राष्ट्रवादी आन्दोलन का जनाधार काफी व्यापक हुआ और इसके शस्त्रागार में प्रत्यक्ष जन कार्यवाही जैसे हथियार जुड़े। इस दौर में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी कई घटनाएँ हुईं जिनमें यूरोपीय देशों में लोकतांत्रिक क्रान्तियों में रूस में समाजवादी क्रान्ति की घटना महत्त्वपूर्ण थी। गॉधीजी के नेतृत्व में कांग्रेस ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन (1930–34) को संगठित किया। यह भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास का दूसरा जन आन्दोलन था।

### पंचम चरण (1934–39)

इस दौर में द्वितीय विश्वयुद्ध का आरम्भ हुआ। कांग्रेस सदस्यों के एक तबके ने गॉधी की विचारधारा, कार्यक्रमों और पद्धति पर विश्वास करना छोड़ दिया। इन सदस्यों ने कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन किया। इस चरण में दलित वर्गों के आन्दोलनों में लगातार वृद्धि हुई। राष्ट्रवादी और साम्प्रदायिक दोनों तरह के बहुत से मुस्लिम राजनीतिक संगठनों का उदय हुआ।

## निष्कर्ष

ए0आर0 देसाई ने **'भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्य में'** स्पष्ट करने के साथ ही भारत के जनवादी आन्दोलन, शिक्षा की भूमिका, साम्प्रदायिकता तथा जातिगत

विभेदों को कुछ प्रमुख सामाजिक तथ्यों के रूप में स्पष्ट किया।

उनके अनुसार भारत में अंग्रेजों द्वारा स्थापित आधुनिक शिक्षा यहॉ राष्ट्रवाद का सबसे प्रमुख माध्यम सिद्ध हुई। अंग्रेजों द्वारा स्थापित आधुनिक शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रवाद व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा सामाजिक न्याय को महत्त्व दिया। इसके साथ ही श्रमिकों, किसानों तथा समाज के शोषित वर्गों की जागरुकता के कारण ही भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में वृद्धि हुई। इसके बाद भी यहॉ साम्प्रदायिकता पर आधारित विभाजन के प्रयत्न तथा जातियों के बीच पाया जाने वाला विभाजन वह प्रमुख बाधाऍ सिद्ध हुईं। इसका तात्पर्य यह है कि, **''राष्ट्रवाद के लिए एक समताकारी समाज का होना तथा समाज के दुर्बल वर्गों के हितों को सर्वोच्च महत्त्व देना आवश्यक है।''**

## सन्दर्भ सूची

ए0आर0 देसाई, भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, मैकमिलन इण्डिया लि0, दरियागंज, नई दिल्ली–110002 से संकलित।